

सूरह लुक़मान - 31

سُورَةُ الْقَمَانِ

सूरह लुक़मान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 34 आयतें हैं।

- इस सूरह में लुक़मान को ज्ञान देने की बात है इस लिये इस का नाम सूरह लुक़मान है।
- इस में धर्म के विषय में विचार करने तथा अंध विश्वास से बचने तथा उन निशानियों से शिक्षा लेने के निर्देश दिये गये हैं जिन से जीवन सुधरता है।
- अल्लाह तथा धर्म के बारे में बिना ज्ञान के बात करने पर सावधान किया गया है और कर्म सुधारने पर उत्तम परिणाम की शुभसूचना दी गई है।
- लुक़मान की उत्तम बातों का वर्णन किया गया है जो कुर्आन पाक की शिक्षाओं के अनुसार हैं।
- उन निशानियों को बताया गया है जिन से तौहीद तथा आख़िरत की राह खुलती है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के सामने उपस्थित होने के दिन से डराया गया है और बताया गया है कि वह सब कुछ जानता है ताकि उस की आख़िरत के बारे में सूचना का विश्वास हो जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम।
2. यह आयतें हैं ज्ञानपूर्ण पुस्तक की।
3. मार्ग दर्शन तथा दया है सदाचारियों के लिये।
4. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं तथा ज़कात देते हैं और परलोक पर (पूरा) विश्वास रखते हैं।

الْقَمَانِ

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ

بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

5. वही लोग
अपने पालनहार के शुपथों पर हैं।
तथा वही लोग सफल होने वाले हैं।
6. तथा लोगों में वह (भी) है जो
खरीदता है खेल की¹ बात ताकि
कुपथ करे अल्लाह की राह (इस्लाम)
से बिना किसी ज्ञान के और उसे
उपहास बनाये। यही है जिन के लिये
अपमानकारी यातना है।
7. और जब पढ़ी जायें उस के समक्ष
हमारी आयतें तो वह मुख फेर लेता
है घमंड करते हुये। जैसे उस के
दोनों कान बहरे हों, तो आप उसे
शुभसूचना सुना दें दुःखदायी यातना की।
8. वस्तुतः जो ईमान लाये तथा सदाचार
किये तो उन्हीं के लिये सुख के बाग हैं।
9. वह सदावासी होंगे उन में, अल्लाह
का सत्य वचन है, और वही
प्रभुत्वशाली सर्व ज्ञानी है।
10. उस ने उत्पन्न किया है आकाशों
को बिना किसी स्तम्भ के जिन्हें तुम
देख रहे हो, और बना दिये धरती
में पर्वत ताकि डोल न जाये तुम्हें
लेकर, और फैला दिये उन में हर
प्रकार के जीव, तथा हम ने उतारा
आकाश से जल, फिर हम ने उगाये
उस में प्रत्येक प्रकार के सुन्दर जोड़े।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

وَإِذَا تَنَزَّلَ عَلَيْهِ الْيُنْتَاوَلَىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ
يَسْمَعْهَا كَأَن فِيَّ أُذُنَيَّ وَقُرْآءَةً قُبُورُهُ
يَعَذَابُ إِلَيْهِ ﴿٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْنَعِيمِ ﴿٨﴾

خَالِدِينَ فِيهَا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَآلَتِي فِي
الْأَرْضِ رَوَايَ أَنْ تَحِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ
دَابَّةٍ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن
كُلِّ نَوْءٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾

1 इस से अभिप्राय गाना-बजाना तथा संगीत और प्रत्येक वह साधन हैं जो सदाचार से अचेत कर दें। इस में किस्से, कहानियाँ, काम संबंधी साहित्य सब सम्मिलित हैं।

11. यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्होंने ने जो उस के अतिरिक्त है? बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में हैं?

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿١١﴾

12. और हमने लुकमान को प्रबोध प्रदान किया कि कृतज्ञ बनो अल्लाह के, तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये। और जो आभारी न हो तो अल्लाह निःस्वार्थ सराहनीय है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ لَئِنْ أَشْكُرَ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيْرٌ حَمِيْدٌ ﴿١٢﴾

13. तथा (याद करो) जब लुकमान ने कहा अपने पुत्र से जब वह समझा रहा था उसे: हे मेरे पुत्र! साझी मत बना अल्लाह का, वास्तव में शिर्क (मिश्रण वाद) बड़ा घोर अत्याचार^[1] है।

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَبْنِي لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾

14. और हम ने आदेश दिया है मनुष्यों को अपने माता-पिता के संबन्ध में, अपने गर्भ में रखा उसे उस की माता ने दुःख पर दुःख झेल कर, और उस का दूध छुड़ाया दो वर्ष में कि तुम कृतज्ञ रहो मेरे और अपनी माता-पिता के, और मेरी ही ओर (तुम्हें) फिर आना है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَفَضَّلَهُ فِيْ عَمَلَيْنِ ۖ إِنَّ شَكَرْلِيْ وَلَوْلَا ذِكْرُ الْإِلَهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾

15. और यदि वह दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे जिस का तुम को कोई ज्ञान नहीं, तो न^[2] मानो उन दोनों की

وَلَنْ جُهْدِكُمْ عَلٰى أَنْ تُشْرِكُوا بِمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبِ مَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَآتِيْعَةُ سَيِّئِلٍ مَنْ أَنَابَ ۚ إِلَٰهُنَّ إِلَٰهُنَّ ثُمَّ إِلَٰهُنَّ إِلَٰهُنَّ ثُمَّ إِلَٰهُنَّ إِلَٰهُنَّ

1 हदीस में है कि घोर पापों में से: अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ-बाप के साथ बुरा व्यवहार, जान मारना तथा झूठी शपथ लेना है। (सहीह बुखारी: हदीस नं॰: 6675)

2 हदीस में है कि पाप में किसी की बात नहीं माननी है पुण्य में माननी है। (सहीह बुखारी: 7257)

बात। और उन के साथ रहो संसार^[1] में सुचारू रूप से, तथा राह चलो उस की जो ध्यान मग्न हो मेरी ओर, फिर मेरी ही ओर तुम्हें फिर कर आना है तो मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा उस से जो तुम कर रहे थे।

16. हे मेरे पुत्र! यदि हो (कोई कर्म) राई के दाने के बराबर, फिर वह यदि हो किसी पत्थर के भीतर या आकाशों में या धरती में, तो उसे भी उपस्थित करेगा^[2] अल्लाह। वास्तव में वह सब महीन बातों से सूचित है।

17. हे मेरे पुत्र! स्थापना कर नमाज़ की और आदेश दे भलाई का तथा रोक बुराई से और सहन कर उस (दुख) पर जो तुझे पहुँचे, वास्तव में यह बड़े साहस की बात है।

18. और मत बल दे अपने माथे पर^[3] लोगों के लिये तथा मत चल धरती में अकड़ कर। निःसंदेह अल्लाह प्रेम नहीं करता^[4] किसी अहंकारी गर्व करने वाले से।

19. और संतुलन रख अपनी चाल^[5] में तथा धीमी रख अपनी आवाज़,

فَأَنبِئْكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥﴾

يُنَبِّئُ الْهَآءِ أَنْ تَكَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ
فَتَكُنْ فِي صَفَرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ
يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٥﴾

يُنَبِّئُ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَامْرُءٌ بِالْمَعْرُوفِ وَإِنَّهُ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَى مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ
مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٥﴾

وَلَا تَصْعِرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ
مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٥﴾

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ

1 अर्थात माता-पिता यदि मिश्रणवादी और काफिर हों तब भी उन की संसार में सहायता करो।

2 प्रलय के दिन उस का प्रतिफल देने के लिये।

3 अर्थात गर्व से।

4 सहीह हदीस में कहा गया है कि, वह स्वर्ग में नहीं जायेगा जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी अहंकार हो। (मुस्नद अहमद: 1/412)

5 (देखिये: सूरह फुर्कान, आयत नं॰: 63)

वास्तव में सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

20. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने बश में कर दिया^[1] है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा? और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय^[2] में बिना किसी ज्ञान तथा बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी दिव्य (रोशन) पुस्तक के।

21. और जब कहा जाता है उन से कि पालन करो उस (कुर्आन) का जिसे उतारा है अल्लाह ने, तो कहते हैं: बल्कि हम तो उसी का पालन करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यद्यपि शैतान उन्हें बुला रहा हो नरक की यातना की^[3] ओर?

22. और समर्पित कर देगा स्वयं को अल्लाह के तथा वह एकेश्वर वादी हो तो उस ने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा तथा अल्लाह ही की ओर कर्मों का परिणाम है।

23. तथा जो काफिर हो गया तो आप को उदासीन न करे उस का कुफ़र। हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर हम सूचित कर देंगे उन को उन के कर्मों से। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी

إِنَّ أَكْثَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ تَأْنِي السَّمَوتِ وَتَأْنِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءُنَا أَوْ لَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ

وَمَن يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ

وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

1 अर्थात् तुम्हारी सेवा में लगा रखा है।

2 अर्थात् उस के अस्तित्व और उस के अकेले पूज्य होने के विषय में।

3 अर्थात् क्या वह सत्य और असत्य में अन्तर किये बिना असत्य ही का पालन करेंगे, और न समझ से काम लेंगे, न धर्म पुस्तक को मानेंगे?

है दिलों के भेदों का।

24. हम उन्हें लाभ पहुँचायेंगे बहुत^[1],
थोड़ा फिर हम विवश कर देंगे उन्हें
घोर यातना की ओर।

25. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि
किस ने उत्पन्न किया है आकाशों
तथा धरती को, तो अवश्य कहेंगे
कि अल्लाह ने, आप कह दें कि सब
प्रशंसा अल्लाह के लिये^[2] है, बल्कि
उन में अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।

26. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों
ताथ धरती में है, वास्तव में अल्लाह
निस्पृह सराहनीय है।

27. और यदि जो भी धरती में वृक्ष है
सब लेखनियाँ बन जायें तथा उस के
पश्चात् सागर स्याही हो जायें सात
सागरों तक, तो भी समाप्त नहीं होंगे
अल्लाह (कि प्रशंसा) के शब्द, वास्तव
में अल्लाह प्रभाव शाली गुणी है।

28. और तुम्हें उत्पन्न करना और पुनः
जीवित करना केवल एक प्राण के
समान^[3] है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ
सुनने जानने वाला है।

29. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह
मिला^[4] देता है रात्री को दिन में और

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
لَيَقُولَنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ
يَمْدُ ۚ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ
كَلِمَاتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَبْعَثُكُمْ إِلَّا كَنُفُسٍ وَاحِدَةً
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُؤَلِّمُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّمُ النَّهَارَ

1 अर्थात् संसारिक जीवन का लाभ।

2 कि उन्होंने ने सत्य को स्वीकार कर लिया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य से सब को एक प्राणी के पैदा करने तथा जीवित करने के समान पुनः जीवित कर देगा।

4 कुर्आन ने एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने तथा मिश्रणवाद का खण्डन करने के

मिला देता है दिन को^[1] रात्री में, तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को, प्रत्येक चल रहा है एक निर्धारित समय तक, और अल्लाह उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँती अवगत है।

30. यह सब इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा असत्य है, तथा अल्लाह ही सब से ऊँचा, सब से बड़ा है।
31. क्या तुम ने नहीं देखा कि नाव चलती है सागर में अल्लाह के अनुग्रह के साथ, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ है प्रत्येक सहनशील कृतज्ञ के लिये।
32. और जब छा जाती है उन पर लहर छत्रों के समान, तो पुकारने लगते हैं अल्लाह को उस के लिये शुद्ध कर के धर्म को, और जब उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है थल तक तो उन में से कुछ संतुलित रहने वाले होते हैं। और हमारी निशानियों को प्रत्येक वचनभंगी अति कृतघ्न ही नकारते हैं।
33. हे लोगों! डरो अपने पालनहार से तथा भय करो उस दिन का जिस

فِي الْيَلِيلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣٠﴾

ذَٰلِكَ يَٰأَنَّهُ اللَّهُ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٣١﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ يَجْرِي فِي الْبَحْرِ يَنْصَبُ اللَّهُ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٢﴾

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوَاجٌ كَالظُّلُلِ دَعَا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا غَشَاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٣﴾

يَٰ أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۖ وَأَخْشَوْا يَوْمَ لَا يَجُزِي

लिये फिर इस का वर्णन किया है कि जब विश्व का रचयिता तथा विधाता अल्लाह ही है तो पूज्य भी वही है, फिर भी यह विश्वव्यायी कुपथ है कि लोग अल्लाह के सिवा अन्य कि पूजा करते तथा सूर्य और चाँद को सज्दा करते हैं, निर्धारित समय से अभिप्राय प्रलय है।

1 तो कभी दिन बड़ा होता है तो कभी रात्री।

दिन नहीं काम आयेगा कोई पिता अपनी संतान के और न कोई पुत्र काम आने वाला होगा अपने पिता के कुछ^[1] भी। निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें कदापि धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से प्रवंचक (शैतान)।

وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازِعٌ
وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرُّكُمُ الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا وَلَا يَغُرُّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ﴿٢٠﴾

34. निःसंदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय^[2] का ज्ञान, और वही उतारता है वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल, और नहीं

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا
تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ
تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٢١﴾

- 1 अर्थात् परलोक की यातना संसारिक दण्ड के सामान नहीं होगी कि कोई किसी की सहायता से दण्ड मुक्त हो जाये।

- 2 अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन लोगों के बीच बैठे हुये थे कि एक व्यक्ति आया, और प्रश्न किया कि अल्लाह के रसूल! ईमान क्या है? आप ने कहा: ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर तथा उस के फरिश्तों, उस के सब रसूलों और उस से मिलने और फिर दौबारा जीवित किये जाने पर ईमान लाओ।

उस ने कहा: इस्लाम क्या है? आप ने कहा: इस्लाम यह है कि केवल अल्लाह की इबादत करो और किसी वस्तु को उस का साझी न बनाओ, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रमज़ान के रोज़े रखो।

उस ने कहा: इहसान क्या है? आप ने कहा: इहसान यह है कि अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। यदि यह न हो सके तो यह ख़याल रखो कि वह तुम्हें देख रहा है।

उस ने कहा: प्रलय कब होगी? आप ने कहा: मैं प्रश्नकर्ता से अधिक नहीं जानता। परन्तु मैं तुम्हें उस की कुछ निशानियाँ बताऊँगा: जब स्त्री अपने स्वामिनी को जन्म देगी और जब नंगे निः वस्त्र लोग मुखिया हो जायेंगे। पाँच बातों में जिन को अल्लाह ही जानता है। और आप ने यही आयत पढ़ी। फिर वह व्यक्ति चला गया। आप ने कहा: उसे बुलाओ, तो वह नहीं मिला। आप ने फ़रमाया: वह ज़िब्रील थे, तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आये थे। (सहीह बुख़ारी 4777)

जानता कोई प्राणी कि किस धरती
में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब
कुछ जानने वाला सब से सूचित है।

